शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-२ अंक-२

माह : अगस्त २०१६

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-२

माह- अगस्त २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

यह सच है कि बुद्धिजीवी वर्ग का स्वाभाविक दायित्व अपने समय की सीमाओं को, समस्याओं को रेखांकित करना है, तथापि यह भी सही है कि समस्याएँ पहचानने के बाद उनके समाधान का गुरुतर दायित्व भी इसी समाज का है। मिशन शिक्षण संवाद की गतिविधियाँ इसी दायित्व के निर्वहन का गम्भीर प्रयास हैं। यह अंधेरे की गहनता को कोसने के स्थान पर अपनी सामर्थ्य भर दीपक जलाने की जिजीविषा का साक्षात प्रमाण है।

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद का प्रकाशन इसके कार्यों व उपलब्धियों के प्रचार– प्रसार का स्रोत होने के कारण तो महत्वपूर्ण है ही। यह पत्रिका इसलिए भी स्तुत्य है कि यह दीपक जलने के साहस को प्रत्येक शिक्षक के भीतर संचरित करने का पुनीत कार्य कर रही है। पत्रिका एक सैद्धांतिकी उपलब्ध करा रही है जिसका सतर्क अवगाहन अन्य संगठनों को कार्य पद्धति की शिक्षा भी देता है।

शिक्षक समुदाय के मन में साहस व संकल्प, सार्थकता व स्वाध्याय की यह ज्योति दीर्घजीवी हो, इस हेतु हम सब की शुभकामनाएँ व प्रार्थनाएँ इसके साथ हैं।

पवन कुमार (PES)
वरिष्ठ प्रवक्ता डाइट
चित्रकूट, उ0प्र0

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

शिक्षक होने के लिए तथ्यों का जखीरा या सूचनाओं का प्रेषक होना आवश्यक नहीं होता बल्कि आवश्यक होता है भावनाओं के साथ–साथ कर्त्तव्यनिष्ठा की मूरत होना। आज का युग ज्ञान का युग है। बहुत तेजी से ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे हैं। लेकिन भावनाओं को हमने एक कोने में ढकेल सा रखा है। आज प्रोफेशनल लोगों की कमी नहीं है लेकिन संवेदनशीलता की कमी अवश्य हो रही है। कारण शायद यही रहा कि हमने ज्ञान को तो महत्त्व दिया लेकिन व्यक्तित्व निर्माण कहीं पीछे रह गया। यदि व्यक्तित्व निर्माण हुआ तो भी मात्र उतना जितने से उत्पादकता का कौशल आ जाए। इसीलिए आज के शिक्षकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को मात्र सूचनाओं का संकलनकर्त्ता न बनाकर संवेदनशील भी बनाया जाए। इसके लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से परिचित कराया जाए। सांस्कृतिक और पर्यावरण के प्रति चलाए जा रहे ऐसे कार्यक्रम इसमें महती भूमिका निभा सकते हैं।

मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य भी शिक्षा के ज्ञानात्मक उद्देश्य के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण का व्यवहारिक उद्देश्य भी रहा है। इसीलिए तो मिशन के तहत शिक्षण से सम्बंधित नवाचार और गतिविधियों के साथ–साथ नैतिक प्रभात और विचारशक्ति को भी भरपूर स्थान दिया जाता है। रेडटेप जैसे कार्यक्रमों में सहभागिता मिशन शिक्षण संवाद के पर्यावरण के प्रति अपने उत्तरदायित्व को दर्शाता है।

विचारशक्ति से लेकर बाल साहित्य से भरा और गतिविधियों से लेकर टीएलएम कॉर्नर से सजा शिक्षण संवाद पत्रिका का अगस्त अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के प्रति आपकी राय की प्रतीक्षा पूरी पत्रिका टीम को रहेगी।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7–8
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	9–10
मिशन गीत	11
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	12–14
निन्दक नियरे राखिए	15–16
टी.एल.एम.संसार	17–19
शिक्षण गतिविधि	20–23
नवाचार	24–25
इंग्लिश मीडियम डायरी	26–28
प्रेरक–प्रसंग	29
सद्विचार	30
बाल साहित्य	31
बच्चों का कोना	32–35
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	36
माह का मिशन	37
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	38
योग विशेष	39
खेल विशेष	40–41
अनमोल बाल रत्न	42
प्रकाश की बेटी किरण	43–46

विचारशक्ति

नयी शिक्षा नीति–सिद्धांत और सच्चाई

शिक्षण संवाद

हाल ही में भारत की नई शिक्षा प्रणाली के विजन को तैयार किया गया है। भारत 2032 तक संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के साथ तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी जगह बनाने की महत्वाकांक्षा रखता है और आशा करता है कि यह नीति एक बड़ा परिवर्तन लाएगी। २१ वीं सदी के लिए अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने 1996 में यूनेस्को को एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें तर्क प्रस्तुत किया गया है कि जीवन भर की शिक्षा चार स्तंभों पर आधारित है–जानने के लिए सीखना, करने के लिए सीखना, साथ रहने के लिए सीखना और शिक्षित होने के लिए सीखना।

बेशक नई शिक्षा नीति बहुत शानदार है जिससे हमारे देश का भविष्य बहुत उज्ज्वल बनेगा। अब मैं बात करना चाहूँगी उत्तर प्रदेश के सरकारी विद्यालयों की। शिक्षा प्राप्ति हेतु जितनी भी नीतियाँ हैं वह केवल शानदार विद्यालय में बेहतरीन शिक्षण कार्य से 100% तक सफल नहीं हो सकती। शिक्षक, छात्र, अभिभावक, परिवार तथा परिवेश सभी की अहम भूमिका होती है। शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार हेतु बच्चे का शैक्षिक स्तर बहुत सारे कारकों पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर करता है। मैं स्वयं काफी वर्षों से शिक्षण कार्य कर रही हूँ। लगभग हर वर्ग के बच्चे को पढ़ाया है। मैंने उनके मानसिक स्तर को जाना है तथा वर्तमान में सरकारी विद्यालय में शिक्षण कार्य कर रही हूँ।

मेरे विद्यालय में अधिकांश बच्चे मजदूर वर्ग से हैं जिनके माता–पिता अशिक्षित हैं, जब वो घरों से बाहर कार्य करने जाते हैं, तब ताले ना होने के कारण घरों की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी उन्हीं की होती है। घर की जिम्मेदारी के साथ –साथ छोटे भाई बहन के पालन में सहायता, आर्थिक व्यवस्था संभालने में अभिभावकों की मदद का अतिरिक्त भार भी इन्हीं बच्चों के नाजुक कंधों पर होता है। इनके पास जागरूक होते हुए भी धनाभाव के कारण बेहतर खानपान की सुविधा नहीं होती।

इन सभी समस्याओं की समझ मुझे इसलिए है क्योंकि मैं अपने विद्यालय से भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई हूँ। नियमित बैठकें आयोजित कर ग्रामीणों से चर्चा की है। अपने बच्चों के साथ–साथ अभिभावकों के मनोभाव को भी जाना है एवं उन्हें जागरूक बनाया है। चर्चा में उन्होंने बताया कि घर खर्च हेतु उन्हें दूसरे लोगों के खेतों पर भी कार्य करना होता है जिसमें वे अपने बच्चों की मदद लेते हैं। जब तक हमारे देश में ग्रामीणों का जीवन स्तर नहीं सुधरेगा, शिक्षा का स्तर भी हमारी आशाओं के अनुरूप नहीं हो सकता है। हमारी सरकार सरकारी विद्यालयों में निशुल्क यूनिफॉर्म, स्वेटर, जूते, पुस्तकें आदि बच्चों को उपलब्ध कराके हर संभव सहायता करती है। परंतु यह समाधान उनकी सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता।

फसल के समय छात्र उपस्थिति में गिरावट का जिम्मेदार शिक्षकों को ठहराया जाता है परंतु अपने माता–पिता के कार्यों में मदद करना क्या बच्चे की जिम्मेदारी नहीं? सरकारी विद्यालयों के

जूनियर विद्यालयों में भारी भरकम पाठ्यक्रम, शिक्षकों पर शिक्षण कार्य से अतिरिक्त अन्य कार्यों का बोझ तथा सबसे महत्वपूर्ण शिक्षकों का अभाव अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। क्या प्राइवेट विद्यालयों में 1 या 2 शिक्षक पूरा विद्यालय संभालते देखे गए हैं?

इन सभी विषयों पर चर्चा कब की जाएगी? समाज में सरकारी विद्यालयों की तुलना निजी विद्यालयों से क्यों की जाती है? सरकारी शिक्षक प्रशिक्षित होते हैं जो प्रतियोगी परीक्षा व साक्षात्कार के बाद ही विद्यालय में नियुक्त होते हैं फिर क्यों उनके कार्यों पर संदेह करता है समाज?

निजी विद्यालयों में शिक्षक की निश्चित कक्षाएँ होती हैं जिसमें वे केवल अपना विषय पढ़ाते हैं और सरकारी विद्यालयों में हम प्रधानाध्यापक ना होने की स्थिति में उसी वेतनमान में प्रधानाध्यापक के दायित्व के साथ–साथ शिक्षक व क्लर्क आदि की भूमिका भी अदा करते हैं। सरकारी अध्यापकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बहुत लंबी है। हमारे सरकारी शिक्षक अपने घरों से बहुत दूर अलग जनपदों में नियुक्त होते हैं और हमारा सालों तक स्थानांतरण नहीं किया जाता है। हम अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से समझौता कर अपनी मानसिक पीड़ा के साथ विद्यालयों में अथक प्रयासों से शिक्षा के स्तर को निरंतर सुधारने में लगे हुए हैं। यह होता है एक सरकारी शिक्षक का समर्पण भाव। मुझे गर्व है कि मैं एक सरकारी शिक्षक हूँ जो विषम परिस्थितियों में भी राष्ट्र के उज्जवल भविष्य हेतु तन मन धन से समर्पित हूँ। मैंने अपने विद्यालय को एक नई पहचान देकर तथा ग्रामीणों को जागरूक बनाकर राष्ट्र सेवा की है।

उत्तर प्रदेश से ऐसे हजारों विद्यालय हैं, जहाँ शिक्षकों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और अपने शिक्षक धर्म को पूर्णतः निभाया भी है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि बहुत सारी निजी संस्थाएँ हमारे प्रदेश में शिक्षकों के प्रयासों में रुचि ले रही हैं। हमारी नीतियाँ तभी सफल होंगी जब विद्यालय स्तर पर समस्याओं को समझकर उन्हें तुरंत दूर किया जाए व मानकों में सुधार कर शिक्षक नियुक्त करने को साथ–साथ भौतिक परिवेश में सुधार कर शिक्षकों को गृह जनपदों में नियुक्त किया जाए।

समाज शिक्षकों का सम्मान करें व सकारात्मक सोच रखें। अभिभावकों को अपने बच्चे के प्रति कर्तव्यों का ज्ञान हो और वे उसके सपनों का सम्मान करें। इन प्रयासों से हमारा समाज उन्नति करेगा व राष्ट्र का भविष्य उज्जवल होगा। राष्ट्र का निर्माण शिक्षक करता है और वह जानता है कि उसे कैसे बेहतर बनाया जाए। शिक्षकों के हितों को भी ध्यान में रखा जाए जिससे कि वह प्रसन्नचित्त होकर नवाचारों द्वारा विद्यालय को जीवंत रखें। समाज को अपना नजरिया बदलने की आवश्यकता है, वो अपने परिवार का उत्थान करें। अपने बच्चे को नियमित विद्यालय भेजें व नैतिक मूल्यों और संस्कारों से अपने बच्चे के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाएँ।

सुमन शर्मा,
इंचार्ज अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय माँकरौल,
विकास खण्ड–इगलास,
जनपद–अलीगढ़।

मिशन के अनमोल रत्नों से महकी स्टेट अवार्ड की बगिया
–उ0प्र0 सरकार द्वारा घोषित वर्ष 2018 के 49 में से मिशन से जुड़े 35 शिक्षकों को प्रदान किया गया राज्य शिक्षक सम्मान 2018
–मिशन शिक्षण संवाद परिवार के लिए गौरव के पल

–डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक, संपादक, शिक्षण संवाद

उ0प्र0 सरकार द्वारा घोषित वर्ष 2018 के 49 में 35 शिक्षकों को स्टेट अवार्ड प्रदान किए जाने से राज्य शिक्षक सम्मान 2018 की बगिया मिशन शिक्षण संवाद के अनमोल रत्नों से महक उठी। विभिन्न जनपदों के अपने विद्यालयों में बेहतरीन कार्यों से अपनी अलग व सकारात्मक पहचान बनाने के साथ ही विभाग को गौरवान्वित कर रहे इन शिक्षकों को प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित किए जाने से मिशन से जुड़े शिक्षकों में और उत्साह जगा दिया है।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान ऑडीटोरियम लखनऊ में 05 सितम्बर 2018 को शिक्षक दिवस पर आयोजित भव्य समारोह में राज्य सरकार के विशेष निमंत्रण पर मुझे उ0प्र0 के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, शिक्षा मंत्री डॉ0 सतीश द्विवेदी जी के हाथों अपर मुख्य सचिव श्रीमती रेणुका कुमार जी, परियोजना निदेशक श्री विजय किरन आनंद जी, शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह सहित प्रदेश सरकार के विभिन्न माननीय मंत्री गण, माननीय विधायक गण, माननीय विधायक व अन्य गणमान्य अतिथियों और हजारों प्रबुद्ध शिक्षकों के बीच अपने अनमोल रत्नों को सम्मान ग्रहण करने का साक्षी बनने का अवसर मिला। इतनी बड़ी संख्या में अपने साथियों को एक साथ राज्य सम्मान प्राप्त करते देखना मेरे जीवन में बड़े गर्व एवं गौरव का पल था और सम्मान प्राप्त कर रहे शिक्षकों के चेहरों पर सम्मान की खुशी साफ हम सभी को गौरवान्वित कर रही थी।

इस बार राज्य सम्मान प्राप्त करने वाले जिन शिक्षकों ने मिशन के गौरव बढ़ाया है उसमें अलीगढ़

से यतीश कुमार, औरेया से मनीष कुमार, बलरामपुर से ओम प्रकाश सिंह, बाँदा से अंजू गुप्ता, बाराबंकी से सुशील कुमार, बरेली से नम्रता, भदोही–अरविन्द कुमार पाल, बदायूँ से सुधा, देवरिया से आफाक अहमद, गोंडा से डॉ0 राजेश प्रताप सिंह, गोरखपुर से मंजूषा सिंह, हापुड़ से भावना शर्मा, हाथरस से हेमंत कटारा, जालौन से पंकज पालीवाल, जौनपुर से अखिलेश चन्द्र, कन्नौज से आशुतोष दुबे, कौशाम्बी से हरिओम सिंह, कुशीनगर से सूर्य प्रताप, लखनऊ से मोहिनी आभा, मैनपुरी से मयंका शर्मा, मथुरा से श्रीमती नीरज मथुरिया, मऊ से स्वतंत्र कुमार श्रीवास्तव, मेरठ से यतिका पुंडीर, मिर्जापुर से श्वेता अग्रवाल, मुरादाबाद से डॉ0 हरनन्दन प्रसाद, मुजफ्फरनगर से अखलाक अहमद, रामपुर से रेनू सिंह, सिद्धार्थनगर से दुर्गेश मिश्रा, सोनभद्र से अंजू जायसवाल, वाराणसी से रविन्द्र कुमार सिंह, संभल से कपिल मलिक, सीतापुर से रूचि अग्रवाल, एटा से धीरज पाल सिंह तथा उन्नाव से डॉ0 रचना सिंह, शामली से सुवासिनी सहित विभिन्न शिक्षकों के नाम शामिल हैं जिन्होंने अपने उत्कृष्ट कार्यों से हम सबको गौरवान्वित करने का मौका दिया।

गत दो–तीन वर्षों में जिस तरह मिशन के नवाचारी शिक्षकों को राष्ट्रीय सम्मान से लेकर राज्य सम्मान व विभिन्न प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा रहा है उससे समूचे प्रदेश में शिक्षकों में और भी बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलने के साथ ही बेहतरीन कार्य करने का परिवेश बना है। आज प्रदेश ही नहीं देश के विभिन्न राज्यों में मिशन द्वारा प्रतिदिन चलाई जा रही शैक्षिक गतिविधियाँ लाखों शिक्षकों और विद्यालयों तक पहुँच रही हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री योगी आदत्यिनाथ जी तथा शिक्षा मंत्री माननीय डॉ0 सतीश द्विवेदी जी जहाँ सार्वजनिक मंचों से हम सबके प्रयासों की सराहना कर रहे हैं। वहीं बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह जी, अपर निदेशक सुश्री ललिता प्रदीप जी व सहायक शिक्षा निदेशक अब्दुल मुबीन जी तो मिशन के शिक्षकों की गतिविधियों को सोशल मीडिया माध्यमों से लगातार शेयर कर उन्हें उत्साहित कर रहे हैं। गत वर्ष व इस वर्ष के राज्य शिक्षक सम्मान समारोह में जिस तरह माननीय मुख्यमंत्री ने अपने उद्‌बोधन में जिस तरह हमारे प्रयासों के बारे में सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की उस पर हमें गर्व है। यह सच है कि मिशन से जुड़े हजारों शिक्षकों ने भले ही कभी सम्मानों के लिए कार्य नहीं किया लेकिन जिस तरह देश व राज्य की लोकप्रिय सरकार ने अनमोल रत्नों के कार्यों का निष्पक्ष मूल्यांकन कर उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया है, हम पूरे मिशन परिवार की ओर से सरकार व ज्यूरी के सम्मानित सदस्यों को आभार ज्ञापित करते हुए सम्मान प्राप्त सभी शिक्षकों को बधाई ज्ञापित करते हैं।

मिशन गीत

शिक्षण संवाद

'मिशन शिक्षण संवाद' ने किया है बेसिक शिक्षा का उत्थान,
कर्मठ शिक्षकों को इस मंच से मिला है उचित सम्मान।
सब नवाचारों का प्रयोग कर बढ़ाते हैं बच्चों का ज्ञान,
बेसिक शिक्षा को सबके प्रयास से मिली है नयी पहचान।
शिक्षक अपने नवाचारों को 'मिशन' से साझा करते हैं,
जिन्हें अन्य सभी शिक्षक अपने स्कूल मे लागू करते हैं।
पाठ्यसहगामी क्रियाओं को भी 'मिशन' ने अपनाया है,
योग व खेल क्षेत्र में बच्चों को निपुण बनाया है।
कुछ शिक्षक पाठ्यक्रम पर अधारित कविताएँ लिखते हैं,
जिन्हें मिशन के 'काव्यान्जलि' स्तम्भ को समर्पित करते हैं।
बच्चे लयबद्ध रचनाओं से विषयवस्तु का ज्ञान सब पाते हैं,
'मिशन शिक्षण संवाद' की सफलता 'अभिषेक' बताते हैं।

अभिषेक शुक्ला,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय लदपुरा,
विकास क्षेत्र–अमरिया,
जिला–पीलीभीत।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

मंजू वर्मा (प्र०अ०) पू०मा०वि० बरहा, सुरसा, हरदोई

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/blog-post_54.html

रीता गुप्ता (स०अ०) मॉडल प्राइमरी स्कूल बेहट–1, साढोली कदीम, सहारनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/1.html

रीतू पोरवाल (प्र०अ०) EMPS बरमूपुर, औरैया, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/emps.html

वीरेन्द्र प्रताप यादव प्रा०वि० बाँसबारी, केराकत, जौनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/httpsm.html

सुनील आनन्द (स०अ०) पूर्व माध्यमिक विद्यालय बाबा की मठिया, वजीरगंज, गोण्डा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/blog-post_97.html

विवेक पाठक (स०अ०) पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुरसहा, रूपईडीह, गोण्डा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/httpsm_25.html

लाल बहादुर गौतम (प्र०अ०) प्रा०वि० म्योनी, सुरसा, हरदोई

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/06/blog-post_26.html

नीलम जैन (प्र०अ०) प्रा० वि० कंचनपुरा कल्यानपुरा, बिरधा, ललितपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/07/blog-post_42.html

सुभावती पाल प्रधान अध्यापिका प्रा०वि० सुरूवारपट्टी सिकरारा, जौनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/07/blog-post_41.html

शिप्रा प्राथमिक विद्यालय केवटाही उरुवा, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/07/blog-post_7.html

बिन्दु शर्मा (प्र०अ०) प्रा०वि० बालक पाठशाला संख्या 35, जयगंज अलीगढ़

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/07/35.html

उषा त्रिवेदी, रा०प्रा० विद्यालय कोट, नरेंद्र नगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/07/blog-post_69.html

निष्ठुक नियरे राखिए

बेहतर कौन NGO या सरकार

शिक्षण संवाद

सम्मानित साथियों,

आइए, आज चर्चा करते हैं मिशन शिक्षण संवाद के अस्तित्व व उसके द्वारा कराये जा रहे नवाचारों के उद्देश्य पर।

निश्चित रूप से कुछ शिक्षकों को लगता है कि मिशन शिक्षण संवाद के कारण शिक्षकों पर कार्य का भार बढ़ा है, जो शिक्षण कार्य आराम से कुर्सी पर बैठकर हो जाया करता था, वहाँ कुर्सी का उपयोग अब कम हुआ है। किन्तु आप सभी से एक प्रश्न– इससे पहले हमारे बेसिक विद्यालयों की स्थिति क्या थी?

आम जनता के बीच में बेसिक के शिक्षकों की छवि कैसी थी??

क्या आप लोग मिशन से जुड़ने से पूर्व स्वयं बेसिक के शिक्षकों का मजाक नहीं उड़ाते थे?

क्या बेसिक से अभिप्राय हाथ पे हाथ धरकर आराम से अपनी जेब में वेतन पहुँचाना नहीं था?

साथियों जब किसी विभाग में सरकार द्वारा लगातार निवेश किया जा रहा हो किन्तु वहाँ से आशा अनुरूप सार्थक परिणाम ना मिल पा रहे हो तो सरकार के पास उसे निजी हाथों में देने के अलावा कोई विकल्प भी नहीं बचता। क्योंकि निजी संस्था वाले कम निवेश में अधिक व उत्कृष्ट परिणाम देने का दिखावा अच्छे से करते हैं। कारण है उन्हें अपनी नौकरी जो बचानी है। बेसिक की इस दुर्दशा को तथा आने वाले काले भविष्य को देखते हुए ही मिशन शिक्षण संवाद जैसी नवाचारी संस्था का प्रादुर्भाव हुआ। इसका उद्देश्य पूर्ण रूप से बेसिक को अकर्मण्यता की स्थिति से निकालकर इसमें कार्यरत सभी शिक्षकों के भविष्य को उज्ज्वल बनाना था। साथ ही शिक्षा जगत में बेसिक स्तर पर भी सरकारी शिक्षा को ही सर्वश्रेष्ठ बनाना था।

मिशन शिक्षण संवाद ने ही सरकार को यह दिखाया कि बेसिक के मास्टर में निजी स्कूलों के शिक्षकों से अधिक प्रतिभा है। निजी स्कूल जहाँ साधन सम्पन्न व ट्यूशन बेस्ड बच्चों के आधार पर खुद को श्रेष्ठ साबित कर रहे हैं। वही बेसिक के शिक्षक साधन विहीन समाज के सबसे बड़े तबके के बच्चों में प्रतिभा सृजन का कार्य कर रहा है। उन्हें उच्च शिक्षा तक पहुँचाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। ये साधनविहीन किन्तु प्रतिभा संपन्न बच्चे जब बड़े होंगे तो निश्चित रूप से वो मजदूरी की ओर न जाकर कुछ सृजनात्मक कार्य करने को प्रेरित होंगे। जिससे हमारे देश में मजदूरों की संख्या कम होगी, प्रॉफेशनल्स, बिजनेसमैन, डॉक्टर, टीचर, वैज्ञानिक, इंजीनियर व अन्य लोगों की संख्या अधिक होगी।

यह देश विकासशील से विकसित की श्रेणी में तभी पहुँच सकता है जब इसका प्रत्येक नागरिक सुशिक्षित व इनोवेटिव हो। केवल बेसिक शिक्षक ही इसे संभव बना सकता है।

हम सभी लोग हर समय भयभीत रहते हैं, क्रोधित रहते हैं कि सरकार हमारे स्कूलों को निजी हाथों में ना सौंप दे। हम इसका विरोध करने को, धरना देने को तैयार रहते हैं।

क्या हम सिर्फ धरने या विरोध से सरकार को रोक पाएँगे ऐसा करने से?

सोचिए जरा, हमारे बच्चे जिन स्कूलों में पढ़ रहे हैं वहाँ के टीचर भी हमारी ही तरह चाहने लगे कि उन्हें कुछ नया ना करना पड़े, बच्चे चाहे पढ़े या ना पढ़ें, स्कूल चाहे वो जाएँ या ना जाएँ।

ना पेरेंट्स मीटिंग होनी चाहिए, ना बच्चों की परीक्षा की कॉपी दिखाई जानी चाहिए, ना ही कोई आयोजन होना चाहिए किन्तु वेतन उन्हें पूरा मिलता रहे।

तब क्या करेंगे आप?

क्या आप विरोध नही करेंगे?

या उन शिक्षकों को अपना शिक्षक भाई मानकर माफ कर देंगे?

अपनी अंतरात्मा से ये प्रश्न कीजिए और फिर सोचिए कि मिशन शिक्षण संवाद हमें किस ओर बढ़ने को प्रेरित कर रहा है। मिशन शिक्षण संवाद सिर्फ यही चाहता है कि देश के हर बच्चे को हम अपना बच्चा समझकर ट्रीट करें। निश्चित रूप से हमारी इस सोच का परिणाम देश की दिशा व दशा बदल डालेगा।

यदि इतना वेतन मिलने के बाद भी हम कुछ नया करने के प्रति इतने उदासीन हैं तो क्या हम युवा पीढ़ी वास्तव में देश के कर्णधार हो सकते हैं?

क्या देश की गिरती GDP के लिए सिर्फ सरकार ही दोषी है?

हम मजदूर पैदा करने की मानसिकता रखने वाले शिक्षकों का क्या कोई रोल नही इसमें?

यदि प्रोफेसर सिवान या राष्ट्रपति कलाम जी को पढ़ाने वाले शिक्षकों ने भी यही सोचा होता तो क्या वो यहाँ तक पहुँचते?

हम क्यूँ वैसे ही समर्पित व नवाचारी शिक्षक नहीं बन सकते?

हम क्यूँ कोई नया कलाम व नया सिवान पैदा करने का साहस नहीं कर सकते?

हम क्यूँ अपने पेशे के प्रति पूर्णतः समर्पित देशभक्त शिक्षक नहीं हो सकते?

मिशन का मिशन बेसिक को सर्वश्रेष्ठ बनाकर निजी हाथों में जाने से बचाना है।

मिशन बेसिक में आ रहे नए नए NGO की निंदा करता है और उन्हें पूरी तरह खारिज करता है।

मिशन चाहता है कि बेसिक शिक्षक अपनी क्षमता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सरकार को यह बता दे कि उसे सुधार हेतु किसी NGO की आवश्यकता नही है।

मिशन चाहता है कि सरकार भी बेसिक शिक्षकों की शक्ति को पहचाने तथा इसके विस्तार हेतु जागरूक हो ना कि निजीकरण हेतु।

मिशन चाहता है कि इस देश में सिर्फ बेसिक शिक्षा ही सर्वत्र हो, निजी स्कूलों का आधिपत्य समाप्त होना चाहिए।

क्या मिशन गलत चाहता है?

निजी स्कूलों से हमारे स्कूलों में प्रवेश ले रहे हमारे बच्चे निश्चित रूप से बेसिक के बढ़ते कदम का प्रमाण हैं।

निकट भविष्य में बेसिक का विस्तार हो सके, हमें इस हेतु कार्य करना है। बेसिक के विस्तार का सीधा अर्थ होगा हमारी संतान हेतु रोजगार प्राप्ति के अवसर। अपनी जॉब व अपने बच्चों के लिए रोजगार प्राप्ति हेतु दिल से कार्य करने हेतु मैं हरदम तैयार हूँ।

मिशन की नवाचारी गतिविधियों का स्वागत करती हूँ। आप लोगों से भी आशा करती हूँ कि भारत के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आप इसके स्वर्णिम भविष्य के निर्माण में अपनी सार्थक भूमिका निभाएँगे।

जय हिंद, जय भारत, जय शिक्षा, जय शिक्षक

रीता गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेहट नंबर–एक,
विकास क्षेत्र–साढोली कदीम,जनपद–सहारनपुर।

चिड़िया का घोंसला

TLM का नाम–चिड़िया का घोंसला ,
कक्षा:4
विषय:हिंदी
सामग्री: दूब की घास, गीली मिट्टी और वाटर कलर।

TLM निर्माण की प्रक्रिया: दूब की घास, वाटर कलर, गीली मिट्टी टूटी हुई पेड़ की डाली, गीली मिट्टी की चिड़िया व अंडा बनाया गया। फिर सूखने के बाद उस पर वाटर कलर से रंगा गया और दूब की घास को मोड़कर घोंसला बनाया गया उसे पेड़ की डाली पर रख दिया गया। फिर घोंसले में चिड़िया को बैठाकर अंडा रख दिया गया। इस तरह से चिड़िया का घोंसला TLM. तैयार करके बच्चे बहुत खुश हुए।

उपयोगिता: ''कहाँ रहेगी चिड़िया ? कविता का स स्वर वाचन TLM द्वारा कराया गया। बच्चों को भी जानकारी हुई कि चिड़िया तिनका –तिनका जोड़कर घोंसला बनाती है।आंधी के आने से उसका घोंसला और अंडा टूट जाता है।वह अब कहाँ रहेगी।

निर्माणकर्ता : सुमन कुशवाहा,
पदनाम : प्र०अ०
विकास खण्ड : नेवादा,
जनपद: कौशाम्बी।

counting box

TLM --counting box
Class – 1, 2
Subject : Mathematics

Material: shoes box, chart colour paper, paper, colour pen. Fevicol

Leraning outcome:
This TLM is used for ....
..inhence to recognize the digit and numbers.

Monika Saxena,
Assistant Teacher,
EMPS Gosaidaspur,
Block: Gugrapur,
District : Kannauj.

Tic Tac Toe

TLM name - Tic Tac Toe

Useful - It is useful for students in learning vegetables and fruits name with spelling. It is also helpful in differentiating between vegetables and fruits.

Material used - waste materials like old sweet's box, old invitation cards, colours, marker and thermacol, coloured tape.

How to make - make a tic tac toe frame with thermacol in old sweet box, tape all the upper side of thermacol with coloured tape.
Draw, colour and cut different type of vegetables and fruits on the old marriage cards.

How to use - It is used same as Tic Tac toe game is played.

Vartika Awasthi,
Head Teacher,
EMPS Devamai,
Block and district-Mainpuri.

शिक्षण गतिविधि

Jumping jacks learning shapes

शिक्षण संवाद

चुनौती किसी भी विषय को रोचक बनाती है।

कक्षा–कक्ष में कई बार बताने के बाद भी छात्र विषयगत ज्ञान को लंबी अवधि तक याद रख पाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं, ऐसी स्थिति में यदि विषय को खेल से जोड़ दिया जाता है तो रोचकता के साथ–साथ स्थायी अधिगम की प्राप्ति संभव हो जाती है। हम तभी सीखते हैं जब सीखने को तैयार होते हैं। गतिविधियाँ लक्ष्य आधारित शिक्षण में सहायक होती है।

परिचय : इस गतिविधि के द्वारा बच्चे विभिन्न आकृतियों में अंतर कर सकेंगे।

परिवेश में पाई जाने वाली विभिन्न वस्तुओं की आकृति पहचान सकेंगे।

सहायक सामग्री : रंगीन चाक, स्कोरबोर्ड, मार्कर, पर्ची

क्रियान्वयन : सर्वप्रथम बच्चों को टीम में विभाजित करते हैं।

अगर बच्चों की संख्या अधिक है तो 2 से ज्यादा 4 या 5 टीम रख सकते हैं।

जमीन पर आकृतियों का पैटर्न (circle, triangle, square, rectangle, star etc.) रेखांकित कर लेते हैं। आकर्षक एवं रुचिकर बनाने के लिए

रंगीन चाक का प्रयोग कर सकते हैं।

प्रत्येक आकृति के नाम की पर्ची बनाकर एक साथ मिलाकर रखते हैं।

दोनों टीम से एक बच्चे को पर्ची चुनकर आकृति बताने के लिए कहते हैं, जिस आकृति को उसने चुना है उस पर चलते हुए उसे स्कोरबोर्ड तक जाना है और उस आकृति की दो वस्तुओं के नाम लिखने होंगे जो team पहले लिख लेगी उसे 10 अंक मिलेंगे।

इस तरह बच्चों में आकृति की पहचान और उसकी व्यवहारिक समझ विकसित होगी।

विस्तार क्षेत्र : यह गतिविधि आरंभिक कक्षाओं 1 व 2 के लिए भी रूपांतरित की जा सकती है। आकृति के स्थान पर alphabets, numbers, हिंदी वर्णमाला को लिखकर उससे बनने वाले शब्द बताने को कहा जा सकता है।

गतिविधि के लाभ : प्रारम्भिक कक्षाओं में स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति के निर्माण में सहायक

उत्तरोत्तर कक्षाओं में व्यवहारिक ज्ञानार्जन में सहायक

सकारात्मक प्रतिस्पर्धा से सीखने के क्षेत्र में सुधार

छवि अग्रवाल

सहायक शिक्षिका

मॉडल अंग्रेजी प्राथमिक विद्यालय बनपुरवा

ब्लॉक काशी विद्यापीठ, वाराणसी

चित्रकारी पर कदमचाल

शैक्षणिक गतिविधियाँ बालक के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण पायदान का काम करती हैं क्योंकि ये बालक के मन पर सार्थक प्रभाव डालने का एक सशक्त माध्यम है।

यह सब मैं सिर्फ यूँ ही नहीं कह रही बहुत सारे ऐसे पलों को मैंने बच्चों के साथ जिया है।

शैक्षणिक गतिविधियाँ अर्थात मेरे ख्याल से बच्चों की सपनीली, रंगीली, रुपहली दुनिया जिसमें वह जैसे ही प्रवेश करते हैं नीरस से नीरस, उबाऊ से उबाऊ विषय को बड़ी ही खुशी और रोचकता से आत्मसात करते हैं।

हँसते, खेलते, खिलखिलाते, कूदते अपने को उस विषय से जोड़ते बच्चों की शैक्षणिक गतिविधियों की दुनिया और आप सब भी हमारे इस बात से जरूर सहमत होंगे कि यही वह माध्यम है जिससे हम बच्चों के प्रिय बन जाते हैं और उनके दिलों पर राज कर सकते हैं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ कोई नई बात नहीं, बस समय के अनुसार उसका स्वरूप बदल जाता है। किंडर गार्डन पद्धति, मांटेसरी प्रणाली और खेल खेल में शिक्षा, लर्निंग बाय डूइंग इत्यादि अनेकों ऐसे माध्यम है जो शैक्षणिक गतिविधियों का ही एक रूप है।

रोचकता बोधगम्यता के अलावा मेरे विचार से सामाजिकता नैतिकता इत्यादि अनेकों नैतिक मूल्य को सिखाने के लिए बच्चों के जीवन में शैक्षणिक गतिविधियाँ एक अहम भूमिका निभाती हैं जैसे समूहों में बच्चों को बैठकर TLM का निर्माण जिसमें सामाजिक संदेश का पुष्ट होना।

तत्कालीन सामाजिक सुधार पर बच्चों द्वारा किया प्रहसन, नृत्य, नाटक, कविता इत्यादि अनेकों शैक्षणिक गतिविधियाँ उनको एक जिम्मेदार और सामाजिक बनाने की दिशा में मील का पत्थर का काम करती हैं।

अंत में मैं आप सब से इतना ही कहना चाहूँगी कि सच में गतिविधियों को बालक के शैक्षणिक जीवन का एक जरूरी अंग बनाइए और फिर कमाल देखिए।

साभार

सरिता राय
प्रधानाध्यापिका
मॉडल इंग्लिश प्राइमरी स्कूल मण्डुआडीह
काशी विद्यापीठ, वाराणसी

''पूछो प्रश्न करो तरक्की, बूझो प्रश्न बनो गुणवान ''

शिक्षण संवाद

विद्यालय में कक्षा शिक्षण के दौरान मैंने महसूस किया कि छात्रों को पाठ/प्रकरण पढ़ाने के बाद भी सभी छात्रों को अपेक्षित लर्निंग आउटकम नहीं हो पाता। कुछ छात्र प्रश्नों के उत्तर आते हुए भी जवाब नहीं दे पाते। छात्रों की इन कमियों के निराकरण हेतु प्रस्तुत है मेरे द्वारा प्रयोग किया जा रहा नवाचार ''पूछो प्रश्न करो तरक्की, बूझो प्रश्न बनो गुणवान ''।

इस हेतु मैंने गत्ते के दो बॉक्स बनाए। एक बॉक्स पर 'पूछो प्रश्न' लिखा जिसमें छात्रों के विषयगत प्रश्न तथा उनके मन में चल रहे कोई भी प्रश्न शामिल थे। दूसरे बॉक्स 'बूझो प्रश्न में मेरे द्वारा छात्रों हेतु विषयगत एवं सामान्य जानकारी के प्रश्न थे।

छात्रों के प्रश्नों (पूछो प्रश्न बॉक्स) से बारी–बारी से एक–एक पर्ची निकालकर उस पर लिखे प्रश्न को मेरे द्वारा पढ़ा जाता और पहले छात्रों से ही जवाब मिले इसका इंतजार करने के बाद ही मेरे द्वारा उत्तर दिया जाता। छात्रों के प्रश्नों के उत्तर अन्य छात्रों द्वारा दिए जाने पर उनके लिए तालियाँ बजवाई जातीं 'बूझो प्रश्न' बॉक्स से प्रश्नों के उत्तर देने के लिए छात्रों को डेयर करने हेतु प्रोत्साहित करने पर छात्र स्वयं आकर बॉक्स से प्रश्न की पर्ची निकालकर पढ़ने के बाद उसका उत्तर देते। सही उत्तर बताने पर उस छात्र के लिए तालियाँ बजवाई जातीं ।

इस प्रकार मैंने पाया कि इस नवाचार के प्रयोग से छात्रों व विद्यालय को निम्न लाभ हुए–

1– छात्रों के प्रश्नों व दिए गए उत्तर से अन्य छात्रों को लाभ।

2– छात्रों में प्रश्न बनाने व उत्तर देने के कौशल में वृद्धि।

3– छात्रों के हिचकिचाहट में कमी व उनके आत्मविश्वास में वृद्धि।

4– छात्रों को मनोरंजक तरीके से सरल एवं सहज ज्ञानवर्धन।

5– छात्रों में पढ़ाई के प्रति रूचि में वृद्धि।

6– छात्रों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि।

7– छात्रों को जिज्ञासापरक बनाने में सहायक।

8– छात्रों के लर्निंग आउटकम में वृद्धि में सहायक।

9– सभी कक्षाओं के लिए उपयोगी।

अरविन्द कुमार सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय धवकलगंज,
विकास खण्ड–बड़ागाँव,
जनपद–वाराणसी ।

English Medium Diary

HOW TO EASE TEACHING AND LEARNING ENGLISH

शिक्षण संवाद

English is a global language. It has a very significant impact on the world. It is the most widely spoken language all over the world. English language is the biggest mean of communication for almost all the countries because English language is recognized all around the world. IT companies, government modules can't work in synchronization without English.Teaching English can be tricky because it is a foreign language for Indian society and due to its grammatical rules, it can be a confusing language. But it can be taught by exposing the students to numerous word puzzles and one word fill ups which will eventually increase their vocabulary. English teaching requires collective efforts from teachers as well as parents. They must focus on the children and make sure they are learning and adding in their memories what they have been taught."Practice makes men/women perfect." English learning requires dedication and passion to learn something new every day.Learning new words everyday must feel an achievement for the learner and one must cross check words with spelling that he/she hear orally and then use that word in sentences and practice will make him/her a better speaker of English. English can be learnt from media such as TV, smart phones, newspapers, magazines etc. English learning also requires an environment where everybody communicate with one another in English and improve the quality of listening and speaking English.Now let me introduce myself. I am MISHA, assistant teacher at ENGLISH MEDIUM PRIMARY SCHOOL BITIYA, appointed in 2018.As I started working in English medium school I found the major problem among students was very poor vocabulary. So I thought of improving their vocabulary using different methods and techniques. I tried many

things just like giving the password to enter or exit the class, giving them picture stories, helping them making short sentences, using English words as much as possible with them. I found these methods effective also. One of my method that I used in my school was puzzle solving that has been explained below.Puzzle solving: This method is used by me in my classroom teaching. Sheets are prepared for the students and they are given the sheets for solving. Different levels are used for different classes.For lower grades simple words are given as fill ups. Let us take an example: Simple three letter noun words are used for class 1 just like sun, dog, jug, mat, cat and many more. Picture of the noun is being printed and the word is given in the form of fill ups with fist letter being filled.Similarly class 2 students are taken to sentence level and then class 3 students are taken to story level. Simultaneously student's vocabulary improvement goes on with English learning.For senior classes stories are given with blanks in place of nouns and their pictures are given along with. Students are mostly aware of the Hindi word and they try to use English words. The more they try the more they learn.

Misha Arora,
Assistant Teacher,
Primary School Betiya,
District-Saharanpur.

SMART CLASSES:
The New Face of Education

Smart classes have become very popular in the field of education today. Due to its great impact and benefit, most of the educational institution have adopted it. Teachers use countless apps, many of them free for the betterment of their students. The education today has become something the students and teachers walk around with in their pocket. In short we can say that, “Smart classes have become the new face of education.”

Smart classes helps teacher enhancing students academic performance with simple practical and meaningful use of technology. It enables teachers to instantly assess and evaluate the learning achieved by their students in class with innovative use of technology. It is highly efficient in maintaining student's interest and engagement in learning inside the classroom. Smart classes simplifies the problems of teaching and allow the students to vocalize the concept much better than static images and instructions and hence improve learning greatly. Smart classes focuses particularly on the possibility of recent forms of technology. Often known as information communication technology (ICT). It refers to technology that provide access information through telecommunications like radios, mobile phones, laptops, tablets etc.

We conclude that if smartly and statically deployed, modern information and communications technology hold great promise in helping bring quality learning to some of the world's poorest and hardest to reach community.

It has been observed that smart classes concept is growing rapidly in urban as well as in rural areas. That is most important for developing India.

Dr.Suman Rani Agarwal
H. M
Shiva Primary pathshala
Nagar shetra ,Hapur

प्रेरक प्रसंग

मेजर ध्यान चंद

शिक्षण संवाद

सन् 1933 को बात है, रावलपिंडी में पंजाब रेजीमेंट (जिसमें स्वयं ध्यान चंद खेलते थे) और सैपर्स एंड माइनर्स टीम के बीच मैच खेला जा रहा था। ध्यानचंद जी ने अपने शानदार खेल से विरोधियों की रक्षापंक्ति को छिन्न –भिन्न कर दिया था। इस पर विरोधी टीम का सेंटर हाफ अपना संतुलन खो बैठा और उनके अनुशासन विहीन खेल से ध्यानचंद की नाक पर चोट लग गई। खेल तुरंत रोक दिया गया, प्राथमिक चिकित्सा के बाद ध्यानचंद अपनी नाक पर पट्टी बँधवाकर मैदान में लौटे और चोट मारने वाले प्रतिद्वंदी की पीठ थपथपाते हुए मुस्कुरा कर बोले –सावधानी से खेलो ताकि मुझे दोबारा चोट ना लगे, किन्तु विरोधी टीम किसी भी तरह उन्हें चोट पहुँचाने का प्रयास करती रही। मेजर ध्यानचंद ने अपनी चोट का प्रतिशोध लगातार एक साथ 6 गोल कर के लिया।

उनके प्रतिशोध में कितना आदर्श था, यह आज कल्पना मात्र है। यह उस महान खिलाड़ी का गुण है जो उन्हें सबसे सरल और उनके व्यक्तित्व को करिश्माई बनाता है। हम सभी को उनके इस गुण को आत्मसात करना चाहिए।

प्रीति अग्रवाल,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिजौली,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

सद्विचार

मदर टेरेसा

शिक्षण संवाद

शांति की शुरुआत मुस्कुराहट से होती है।

सफलता का रहस्य प्रेम में निहित है।

अनुशासन लक्ष्यों और उपलब्धि के बीच का एक पुल है।

खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते लेकिन अच्छे लोग खूबसूरत होते हैं।

जीवन जो दूसरों के लिए नहीं जिया गया तो वह जीवन नहीं है।

ईश्वर हमसे ये अपेक्षा नहीं करते कि हम सफल हों वे तो केवल इतना चाहते हैं कि हम प्रयास करें।

कार्य में प्रार्थना प्यार है, कार्य में प्यार सेवा है।

कुछ लोग आपके जीवन में आशीर्वाद की तरह कुछ लोग एक सबक की तरह।

अगर आप सौ लोगों को नहीं खिला सकते तो एक को ही खिलाइए।

हम सभी ईश्वर के हाथ में एक कलम के समान हैं।

कल जा चुका है, कल अभी आया नहीं है, हमारे पास केवल आज है, चलिए शुरूआत करते हैं।

दया और प्रेम भरे शब्द छोटे हो सकते हैं, लेकिन वास्तव में उनकी गूंज की कोई सीमा नहीं।

सुमन पाण्डेय
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी,
शिक्षा क्षेत्र–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

सिंड्रेला

शिक्षण संवाद

विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी नम्रता और धैर्य न छोड़ने वालों के साथ अन्ततः अच्छा ही होता है। इस सीख को किसी कहानी ने सबसे अच्छे से दर्शाया है तो वो है सिंड्रेला की कहानी। सिंड्रेला की कहानी इतनी लोकप्रिय है कि हम सबने अपने बचपन में इसे कई बार सुना होगा। हम तो हम हमारे अभिभावकों ने भी इस कहानी को पढ़ा या सुना होगा। हो सकता है कि समय के साथ आपकी स्मृति में यह कहानी थोड़ी धुँधली हो गयी हो। चलिए इस धूल को साफ करते हैं।

यह कहानी है एक युवती कि जिसकी एक सौतेली माँ और दो सौतेली बहनें हैं। ये सब मिलकर सिंड्रेला से काम तो बहुत करवाती हैं लेकिन उसके साथ बेहद उलाहनापूर्ण व्यवहार भी करती हैं। बिन माँ की बच्ची सिंड्रेला यह सब चुपचाप सहती रहती है क्योंकि उसके पिता भी अपनी दूसरी पत्नी के आगे कुछ न बोल पाते।

एक दिन उस राज्य का राजकुमार घोषणा करवाता है कि सभी युवतियाँ नृत्य के लिए राजदरबार आएँ जिसे राजकुमार पसन्द करेगा उससे विवाह करेगा। सिंड्रेला भी इस जलसे में जाना चाहती है लेकिन न तो उसके पास ढंग के कपड़े होते हैं न ही जूते। उसकी सौतेली माँ और बहनें उसे चिढ़ाते हुए इस जलसे में जाती हैं। सिंड्रेला अकेली बैठी स्वयं को कोस रही होती है कि एक परी आकर सिंड्रेला के फटे कपड़ों को गाउन में बदल देती है और उसका सुंदर रूप बनाकर एक गाड़ी में जलसे में जाने को कहती है। लेकिन साथ ही यह हिदायत भी देती है कि आधी रात से पहले वापिस आ जाना क्योंकि यह जादू आधी रात तक ही काम करेगा। सिंड्रेला खुशी–खुशी जलसे में सम्मिलित होती है। वहाँ राजकुमार उसके रूप और व्यक्तित्व पर मुग्ध हो जाता है। लेकिन परी की शर्त के अनुसार सिंड्रेला को उससे नजर बचाते हुए आधी रात से पहले वापिस लौटना पड़ता है। राजकुमार उससे मिलने के लिए परेशान हो उठता है। क्या राजकुमार को सिंड्रेला दुबारा मिल पाएगी? ये जानने के लिए आपको अपने पुस्तकालय में सिंड्रेला को लाना ही होगा। तो जल्दी भागिए निकटस्थ पुस्तक भंडार पर सिंड्रेला आपको बुला रही है।

बच्चों का कोना

मेरा बचपन मेरी ताकत

मेरा बचपन मेरी ताकत
समझो ना कमजोर हमें
कुछ करके दिखाएँगे
अपने हाथों से गुलशन को मिलके सजाएँगे
हम ना डरेंगे, हम ना रुकेंगे, चलते जाएँगे
आसमान को छूने को हम कदम बढ़ाएँगे
लेते हैं हम शपथ कभी ना हारेंगे यारों
शिक्षा का हम घर–घर में एक दीप जलाएँगे
टक्कर लेंगे तूफानों से पीछे ना हटेंगे हम
ताकत बनके अपने वतन की शान बढ़ाएँगे

सीमा गोहर,
मॉडल स्कूल घाटमपुर,
विकास खण्ड–सैदनगर
जनपद–रामपुर।

आओ भइय्या आओ बहना

आओ भइय्या, आओ बहना।
जानो क्या है पढ़ना लिखना।।

जो पढ़ लिख हम जाएँगे।
देश में नाम कमाएँगे।।

डिप्टी कलेक्टर बनकर हम भी।
सब पर रौब जमाएँगे।।

हमने जाना, हमने माना।
शिक्षा सबसे बड़ा खजाना।।

आओ भइय्या, आओ बहना।
जानो क्या है पढ़ना लिखना।।

सुनीता यादव,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मीरा बेहड़,
विकास खण्ड–हरगाँव,
जनपद–सीतापुर।

बिटिया रानी

बिटिया रानी, बिटिया रानी,
मेरी प्यारी बिटिया रानी।

करके आई हो शैतानी?
ना ना!
या फिर की है कोई मनमानी?
ना ना!
गढ़ के लायी कोई कहानी..?
हाहाहा.....हाहाहा।

बिटिया रानी, बिटिया रानी...
मेरी प्यारी बिटिया रानी।

बन गई हो बड़ी सयानी,
ना ना!
पीकर दूध बताती पानी,
ना ना!
बाजार से गुड़िया है या लानी..?
हाहाहा..... हाहाहा।

बिटिया रानी, बिटिया रानी,
मेरी प्यारी बिटिया रानी।

करने लगी हो आना–कानी
ना ना!
शरारत करने की है ठानी
ना ना!
याद आ रही हैं क्या नानी??
हाहाहा..... हाहाहा।

बिटिया रानी, बिटिया रानी,
मेरी प्यारी बिटिया रानी।

ज्योति चौधरी,
सहायक शिक्षिका,
प्रा0वि0इस्लामनगर,
मुरादाबाद।

नवयुग के नव निर्माता

सुंदर, सुरभित,यशस्वी जीवन, के गुण अपनाओ।।
सत्य ,साहस, सृजन को अपना आदर्श बनाओ।।
अपने मधुर स्वर से तुम, प्यार के फूल खिला दो।
कर्मठता की प्रतिभा से, काँटों में भी राह बना दो।।
ओजमयी वाणी से सबको प्रेम का पाठ पढ़ाओ।।
सुंदर, सुरभित, यशस्वी जीवन के गुण अपनाओ।।
सत्य, साहस, सृजन को अपना आदर्श बनाओ।।
आशा के प्रतीक बनो तुम, छोड़ो सब आराम को,
सबसे सर्वोपरि समझो तुम, सेवा त्याग, बलिदान को।
अपने इस संकल्प से, अपना भाग्य चमकाओ।
सुंदर, सुरभित, यशस्वी जीवन, के गुण अपनाओ।
सत्य, साहस, सृजन को अपना आदर्श बनाओ।
प्रगति के पथ पर तुमको, सहस्त्र आपदाएँ आयें जीवन में,
तुम्हें नहीं घबराना है।
अदम्य साहस से तुम आशा के फूल खिलाओ।
सत्य, साहस, सृजन को अपना आदर्श बनाओ।।
सुंदर, सुरभित, यशस्वी जीवन के गुण अपनाओ।।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास क्षेत्र – सिकन्दराबाद,
जिला – बुलंदशहर।

धरती की व्यथा

डॉ0 रेणु देवी,
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय नवादा,
विकास खण्ड व जिला हापुड़।

हवाओं ने मेरे केशों को महकाया था।
पुष्पों और पल्लवों से प्रकृति ने मुझे सजाया था।
दुल्हन की तरह प्रतिपल सजी रहती थी।
मानव है पुत्र मेरा, गर्व से ये कहती थी।
हे दुष्ट मानव! तूने ही उजाड़ दिया मेरा सुहाग।
नव पल्लव सब नोंच डाले, कुचल दिया मेरा अनुराग।
है तुझसे इतना प्रेम मुझे, इसलिए सर्वस्व ये सहती हूँ।
होकर खिन्न आज मैं मानव, व्यथा स्वयं की कहती हूँ।
तुम्हारे दिए घावों ने मेरी घायल कोख जला दी है।
अब विज्ञान के राक्षस ने जकड़ा, क्या यही मेरी आजादी है?
प्राचीन हवाओं ने मृतकों को भी जीवन दान दिया है।
किन्तु आज मेरी इन श्वांसों ने भी विष का पान किया है।
आँचल है मेरा तार–तार, अब कैसे तुम्हें छुपाऊँ मैं?
सूरज की किरणों से आज, स्वयं नग्न जल जाऊँ मैं।
गंगा की भी धार विषैली, इसे कैसे तुम्हें पिलाऊँ मैं??
अपना सीना चीर तुम्हें, और क्या दिखलाऊँ मैं?
तुम्हें यूँ प्यासे देख मेरा सीना तक फट जाता है।
किन्तु व्यथा मेरी ये सुनने को, एक बादल तक नहीं आता है।
मैं प्यासी! बच्चों की प्यास बुझाने को,
फैलाऊँ यूँ आँचल को,
किन्तु जर्जर इस आँचल में,
समेट ना पाऊँ उस जल को।
फिर रोती हूँ, सिसकती हूँ, पूछती हूँ अपने आप से।
वह कौन है? वह कौन है?
जो मुक्ति दिलाए, अपनी माँ को इस शाप से।
अब तो केवल इंतजार है, फिर से उसी बहार का,
जिसमें सुन संगीत मल्हार का,
बरसें अमृत धार।
खिल उठें नव पल्लव, महकें हवाएँ,
लेकर तुम्हें मैं आँचल में, फिर दूँ वही दुलार।
इच्छाओं, आशाओं के रंगों की ये अल्पना है
वो सत्य था–२ किन्तु क्या ये मेरी कल्पना है–२?

परिवर्तन

शिक्षण संवाद

जगतपुर एक उन्नत व सुंदर गाँव है। गाँव मे चौड़ी सड़कें, बिजली व पानी की अच्छी व्यवस्था है। गाँव में इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में भी सभी सुविधाएँ व अच्छे चिकित्सक हैं।इसी गाँव की प्राइमरी पाठशाला में चंचल नाम का एक लड़का पढ़ता है।चंचल पढ़ाई में बहुत ही होशियार है और साथ ही साथ खेल कूद में भी आगे रहता है। मई आने पर चंचल के स्कूल में भी ग्रीष्म अवकाश होता है। इस बार मई जून की छुट्टियों में विदेश से उसका मित्र विशाल भी आया हुआ है।

विशाल का शरीर उसके नाम के अनुरूप भीमकाय है। इसलिए दोनों की जोड़ी (चंचल अपने दिमाग से, विशाल अपनी ताकत का प्रयोग करके) खूब धमाल कर रही है। कभी बगिया में फूल तोड़ना, कभी किसी के जानवर खोल देना पर एक दिन तो हद हो गयी। विशाल चंचल के साथ उसके प्राइमरी विद्यालय गया। वहाँ उसने विद्यालय के पेड़–पौधों को नुकसान पहुँचाना शुरू किया और हँस हँसकर चंचल को भी इस कार्य मे शामिल कर लिया। विशाल पेड़ की डालियाँ तोड़कर, छोटे पौधों को उखाड़कर बोलता देखी ''मेरी ताकत'' एक बार में ही पूरा पौधा उखाड़ दिया। विद्यालय को तहस–नहस करने के बाद, विशाल चंचल को बताने लगा कैसे विदेश में उसके विद्यालय में पेड़ पौधों की क्यारियाँ बनी हैं। वहाँ गमले में सुंदर फूल लगे हैं और उन्हें तोड़ने पर जुर्माना भरना पड़ता है। यह सब सुनकर चंचल को अपनी गलती का एहसास हुआ उसने कैसे अपने सुंदर विद्यालय को उजाड़ दिया। उसने अपने प्रधानाध्यापक गजराज जी से सारी बात बता कर माफी माँगी। गजराज जी जो विशाल के दादा जी भी थे उन्होंने विशाल के पिताजी को सरकारी मिशन के लिए विदेश भेजा था। जिससे विशाल विदेश में पढ़ रहा था। गजराज जी ने ठंडे दिमाग से चंचल की सारी बात सुनी। उन्होंने चंचल और विशाल से विद्यालय की क्यारियों में एक पौधे की जगह पाँच–पाँच पौधे लगवाये। साथ ही शम्भू माली को भी कुछ दिन की छुट्टी दे दी जो अपने गाँव में कुछ दिन के लिए खेती बाड़ी के जरूरी कौशल सीखना चाहते हैं। शम्भू माली की अनुपस्थिति में दोनों ने बहुत ही मेहनत करके विद्यालय को और भी सुंदर बना दिया। चंचल को फूलों को देखकर बहुत खुशी हो रही है साथ ही उसने अब ऐसी हानिकारक शैतानियों से तौबा कर ली। चंचल अब सभी को पेड़ पौधों की देखभाल करने व उनके लाभ बताने लगा है।

ऋतु दुबे,
प्राथमिक विद्यालय अण्डूतारा,
विकास खंड – अमानीगंज,
जनपद–अयोध्या।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

बचपन की बारिशें

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/07/blog-post_23.html

बचपन की बारिशें बड़ी हो गई अब।
धर्म जाति पाति की भेद और भाव की,
कितनी ही दीवारें खड़ी हो गई अब।।
खिड़की से झाँका, तो बाहर बरसातें थीं,
नाचती बूँदों की जैसे बातें थीं।
भीगने बारिश में मन मेरा मचला था,
हाथ मेरा मेरे अहम ने पकड़ा था,
ईगो मेरी बड़ी नकचढ़ी हो गई अब।
बचपन की बारिशें बड़ी हो गई अब।
बारिश के पानी में लगते छपा के थे,
खेलते बारिश में उसमें नहाते थे,
उसी ही बारिश में कीटाणु दिखते हैं,
बीमार न हो जाएँ भीगने से डरते हैं,
बदनाम सावन की झड़ी हो गई अब।
बचपन की.....
बारिश में निकलने से बेटियाँ डरती हैं,
बंद हो जाने का इंतजार करती हैं,
काँच की इज्जत है कहीं टूट जाए ना,
कहीं कोई दामिनी, ट्विंकल लुट जाए ना,
बूँदें माँ के आँसू की लड़ी हो गयीं अब।
बचपन की बारिशें बड़ी हों अब।

रचयिता
पूनम गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय धनीपुर,
जनपद–अलीगढ़।

माह का मिशन

शिक्षा के साथ श्वांसों की व्यवस्था

पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ, जीवन बचाओ अभियान– 2019

शिक्षण संवाद

आज बढ़ते पर्यावरण संकट से जूझ रही दुनिया को बचाने के लिए नई पीढ़ी को आगे आने और पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी उठाने की आवश्यकता है क्योंकि यदि हम सभी आज सचेत नहीं हुए तो आने वाले भविष्य में हमारी श्वांसों पर ही संकट आ सकता है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के जीवन के अस्तित्व पर भी खतरा आ सकता है।

इसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्यावरण की रक्षा और भारत को हरा– भरा बनाने के लिए वृक्षारोपण के बेहतर प्रयास शुरू किए हैं। लेकिन हर वर्ष लगने वाले करोड़ों पौधों में केवल 5 –7 प्रतिशत ही जिंदा रह पाते हैं। इसका प्रमुख कारण है कि प्रकृति संरक्षण में आम जनसमुदाय की सहभागिता और जागरूकता की कमी और जब तक इस अभियान में आम जनसमुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक यह कार्यक्रम अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा।

हमारा मानना है शिक्षक केवल बच्चों को मात्र शिक्षण कार्य करने वाला सेवक नहीं है बल्कि शिक्षक सामाजिक सभ्यता के परिवर्तन का सम्पादक भी है। इतिहास गवाह है कि आज तक कोई भी अभियान, बिना शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता के जन–आन्दोलन का रूप प्राप्त नहीं कर सका है।

इसलिए मिशन शिक्षण संवाद अपने सोशल मीडिया पर जुड़े विभिन्न राज्यों के 50 हजार से ज्यादा शिक्षकों और उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के जनपदों की सक्रिय सहयोगी टीमों के सहयोग और टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश तथा रेड टेप मूवमेंट को शामिल करते हुए इस अभियान को जनसमुदाय से जोड़ने और आम नागरिक को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए 14 अगस्त से 2 अक्टूबर तक पर्यावरण रक्षा के लिए सहभागिता एवं जागरूकता अभियान चला रहा है।

कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों में वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए जाएँगे। सरकारी और निजी सहायता से रोप गए पौधों का संरक्षक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को बनाया जाएगा ताकि इस वर्ष अधिक से अधिक पौधों की देखरेख कर उन्हें जीवित रखा जा सके। गाँव में ग्राम शिक्षा समिति की सहायता से पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा और छात्रों तथा जनसमुदाय को पुराने वृक्षों को न काटने की शपथ दिलाकर उन पर रेड टेप बाँधा जाएगा।

बात शिक्षिकाओं की

एक महिला शिक्षिका की डायरी से

शिक्षण संवाद

2 दिसंबर 1999 का वो दिन जब हमारे सपनों को हकीकत का पंख मिला और मेरी नियुक्ति शिक्षक के रूप में प्रथम प्रयास में ही हो गई क्योंकि मेरा आदर्श हमेशा से ही प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले जी रही हैं।

उनके सार्वजनिक जीवन में भागीदारी की चुनौतियों और संघर्ष को जब भी मैं पढ़ती हूँ तो अनायास ही गौरवान्वित हो जाती हूँ और एक नई ऊर्जा नए जोश के साथ अपने लक्ष्य को साधने की दिशा में कदम आगे बढ़ा देती हूँ।

फिर महिला होने की वजह से जो भी चुनौतियाँ मेरे सामने आती हैं वह मेरी हिम्मत और जोश के सामने बौनी प्रतीत होती हैं।

यह सर्वविदित है कि हम महिलाओं के कार्य क्षेत्रों का आंकलन पुरुषों की अपेक्षा हमेशा से ही अलग ढंग से किया जाता रहा है और इसके साथ ही सामाजिक ताने–बाने के अनुसार महिलाओं पर दोहरा बोझ भी होता है।

इन सबके बावजूद महिलाओं ने अपने को और हर मोर्चे पर अपनी सशक्त और सक्षम उपस्थिति दर्ज कराई है और मेरी नजर में अगर महिला शिक्षक पेशे को अपनाती है तो यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि वह एक सधे हुए कुम्हार के रूप में नजर आती है।

एक माँ सा दुलार पिता सा अनुशासन और गुरु की तरह मार्गदर्शन करती शिक्षक का रूप एक महिला शिक्षिका द्वारा ही संभव है।

आज महिला शिक्षिकाओं के सामने ढेरों चुनौतियाँ तो हैं पर पहले के समय से आज वह बेहतर स्थिति में हैं। हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, सच में एक महिला शिक्षक का रूप अद्वितीय रचनाकार का होता है क्योंकि एक महिला तो जन्मजात शिक्षिका होती ही है शायद इसीलिए माँ को बालक की प्रथम गुरु की संज्ञा दी गई है।

इतिहास अनेकों ऐसे दृष्टांतों से भरा पड़ा है। शिवाजी की माँ जीजाबाई जी को समाज एक महिला शिक्षक एक महिला शिल्पकार के रूप में ही देखते हैं जिन्होंने अपने बेटे के चरित्र को उनके व्यक्तित्व को इतनी उच्च कोटि का बना दिया कि वो इतिहास निर्माता बन गए और आज भी अनेक लोगों के प्रेरणा स्रोत हैं।

it is rightly said school is a child^s second home and female teachers are their second mother so they play an important role in the life of a student-

अनेकों चुनौतियाँ हैं महिला शिक्षकों के सामने क्योंकि उन्हें दोहरी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता है। अभी कुछ दिन पहले ही मलाला यूसुफजई जी ने कहा कि एक किताब एक बच्चा और एक शिक्षक दुनिया बदल सकते हैं। तो इसीलिए मेरी भी यही अभिलाषा है यही कामना है कि हे ईश्वर आपकी दी हुई कृतियों को एक ऐसे सांचे में ढाल सकूँ जो हर पथ को रोशन कर दे और एक महिला शिक्षक के रूप में मैं अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा सकूँ।

अंजू चौबे,
सहायक अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय केराकतपुर,
जनपद–वाराणसी।

भारतीय दर्शन और योग

योग शब्द वेदों, उपनिषदों, गीता एवं पुराणों में अति पुरातन काल से व्यवहृत होता आया है। भारतीय दर्शन में योग एक अति महत्वपूर्ण शब्द है।

योग दर्शन के उपदेष्टा महर्षि पतंजलि 'योग' शब्द का अर्थ चित्तवृत्ति का निषेध करते हैं।

जैनाचार्यों के अनुसार, "जिन साधनों से आत्मा की सिद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है, वह योग है।"

योग के प्रकार

मंत्रयोग

लययोग

हठयोग

राजयोग

योग का शरीर पर प्रभाव–

आसन एवं प्राणायाम से हमारे सुप्त तंतुओं का पुनर्जागरण होता है एवं नये तंतुओं, कोशिकाओं का निर्माण होता है। शरीर में ठीक प्रकार से रक्त संचार होता है और नयी शक्ति का विकास होने लगता है। योग से रक्त संचार पूर्णरूपेण सम्यक् रीति से होने लगता है। आसन एवं प्राणायामों द्वारा शरीर की ग्रंथियों एवं माँसपेशियों में कर्षण–विकर्षण, आकुंचन –प्रसारण तथा शिथिलीकरण की क्रियाओं द्वारा उनका आरोग्य बढ़ता है। रक्त को रहन करने वाली धमनियाँ एवं शिराएँ भी स्वस्थ हो जाती हैं। अतः योग द्वारा पैंक्रियाज सक्रिय होकर इंसुलिन ठीक मात्रा में बनाने लगता है, जिससे डायबिटीज आदि रोग दूर रहते हैं, पाचनतंत्र स्वस्थ रहता है क्योंकि सभी बीमारियों का मूल कारण पाचनतंत्र की अस्वस्थता है। योग से पाचनतंत्र पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाता है, जिससे शरीर स्वस्थ, हल्का और स्फूर्तियुक्त हो जाता है।

सभी अध्यापक–अध्यापिकाओं के लिए स्वास्थ्य का उत्तम रहना अत्यंत आवश्यक है। अतः योग शरीर एवं मन के लिए अनिवार्य है।

शाजिया इशराक,
कम्पोजिट विद्यालय फत्तेहपुर खास,
विकास खण्ड–कुन्दरकी,
जनपद–मुरादाबाद।

खेल किट का विद्यालय पर प्रभाव

शिक्षण संवाद

मनुष्य के लिए अच्छे स्वास्थ्य का होना अत्यंत आवश्यक है। एक स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खेल अथवा व्यायाम की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि जीवन को जीने के लिए भोजन व पानी की। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन की आधारशिला है। खेल विद्यार्थी के मानसिक बोझ और शारीरिक थकान को हल्का करने का एक प्रमुख साधन है।

आज के युग में खेल के माध्यम से विद्यालय में नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जा रहा है। जिसके लिए प्रत्येक विद्यालय में एक शिक्षण किट की व्यवस्था शासन द्वारा उपलब्ध करायी गयी है। किट में क्रमशः दो प्रकार की खेलकूद सामग्री हैं। एक इंडोर खेल सामग्री और दूसरी आउटडोर खेल सामग्री।

इंडोर खेल सामग्री के अंतर्गत कैरम, लूडो, शतरंज, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, आदि खेल सामग्रियाँ होती हैं। इन खेलों को बच्चे विद्यालय के अंदर के मैदान में खेलते हैं तथा आउट डोर खेल जैसे क्रिकेट, बॉलीबाल, हॉकी, कबड्डी, बास्केटबॉल, फुटबॉल आदि खेल होते हैं। जिनको विद्यालय के बाहर बड़े मैदान में खेला जाता है।

खेलकूद किट का प्रयोग विद्यार्थियों के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इससे विद्यार्थियों में शारीरिक स्फूर्ति बनी रहती है। बालकों में टीम भावना एवम छात्र सहभागिता का विकास होता है। विद्यार्थियों में मानसिक दक्षता का विकास होता है। समय के रचनात्मक उपयोग के लिये भी खेल किट की अपनी एक अलग भूमिका है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए भी खेल का अपना एक अलग महत्व है। खेल किट के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने में भी सहयोग मिलता है। विद्यार्थियों में निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास होता है। खेलकूद किट के प्रयोग के बाद विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या में भी अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है। खेलकूद किट का प्रयोग शासन की तरफ से शिक्षण में एक मूलभूत नवाचार है जिससे विद्यार्थियों का न केवल शारीरिक, मानसिक अपितु सर्वांगीण विकास होता है।

हम सभी जानते हैं कि क्रिकेट, फुटबॉल सहित अन्य खेलों को खेलने के लिए एक टीम या समूह की आवश्यकता पड़ती है, जब एक टीम में कई खिलाड़ी होते हैं तो सभी को अलग अलग तरह की जिम्मेदारी भी दी जाती है। इस स्थिति में बालक के अंदर कई तरह के गुण विकसित होते हैं। टीम में कोई भी खेल खेलने से बालक के अन्दर निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है, शुरू में वह सही गलत निर्णय करते करते एक बेहतर और सबके हित में निर्णय लेना सीख जाता है। जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी काम आता है, जब बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है तो वह खेल खेलने के लिए पहल भी करता है और अपने अन्य साथियों को खेल खेलने के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा बच्चा सभी तरह के लोगों से बिना संकोच बात करना सीख जाता है। इससे वह अपनी क्लास में भी शिक्षक से सवाल पूछने में डरता नहीं है।

जो बालक नियमित रूप से कोई न कोई खेलता है वह बाकी बच्चों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ रहता है। रोजाना खेल गतिविधियों में भाग लेने से बच्चे के शरीर मे रक्त का प्रवाह भी बेहतर तरीके से होता है। जिससे बच्चे अन्य रोगों से दूर रहते हैं।

अतः हम यह कह सकते हैं कि विद्यालय में नवाचार के रूप में खेलकूद किट के प्रयोग से बच्चों का आकर्षण विद्यालय के प्रति बढ़ता है और बच्चे खेल के माध्यम से ज्यादा आसानी से विषयवस्तु को सीख जाते हैं।

पारुल सिंह,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय पधारा सेकंड,
विकास खण्ड–देवमई

बाल रत्न

विकास खण्ड, जनपद व मण्डल स्तर पर अपनी दमदार कलाकारी के बलबूते अपनी टीम को राष्ट्रीय एकांकी में प्रथम स्थान दिलाया।
रूपेश कुमार
कक्षा– 8
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुम्भीपुर
विकास खण्ड हथगाम
जनपद– फतेहपुर।

जनपदीय तैराकी प्रतियोगिता 2019 में जनपद फतेहपुर के कम्पोजिट विद्यालय हाजीपुर गंग की छात्रा रेशमा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तैराकी की बटर फ्लाई स्टाइल में 50 मीटर तैराकी प्रतियोगिता में जनपद में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
और लड़कों में जनपद के प्राथमिक विद्यालय गुरवल के छात्र अंकित ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

नामः शिवओम पुत्र श्री मनोज कुमार, कक्षा–5
प्राथमिक विद्यालय ईलर, डिलारी, मुरादाबाद

उपलब्धिः
नवोदय प्रवेश परीक्षा–2019 में कक्षा–6 में प्रवेश के लिए चयनित

साभारः नमिता राजपूत

संकलनः संयोगिता जी
मिशन शिक्षण संवाद मुरादाबाद

"प्रकाश" की बेटी "किरण"

भौतिकी के सिद्धांतों और सामजिक घटनाक्रमों पर आधारित एक रोचक काल्पनिक कहानी

प्यारे बच्चों, दोस्तों और विज्ञान प्रेमियों आप सभी जानते हैं कि ये भौतिकी की दुनिया बड़ी कमाल की है कुछ भी निरुत्तर नहीं है, सब कुछ क्रमबद्ध और सुलझा हुआ है बस यह निर्भर करता है कि हम इसे किस दृष्टिकोण से देखते हैं।

एक पेंसिल जो हमेशा सीधी होती है पर भौतिक दृष्टिकोण को बदलने पर वह पानी के भीतर टूटी/मुड़ी हुई नजर आती है।

प्रकृति में ये खूबसूरत रंग इसलिए नजर नहीं आते क्योंकि वो अलग हैं बल्कि इसलिए कि वो सब साथ होकर भी हमें वापस क्या देते हैं ? ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि हर रंग कुछ विशेष परिस्थितयों में एक विशेष जिम्मेवारी का निर्वाहन करता है। जी हाँ हम बात कर रहे हैं परावर्तन की अर्थात प्रकाश के परावर्तन की। हम जो भी देखते हैं वो भी स्वयं से प्रकाशित होकर नहीं दिखता है बल्कि अन्य प्रकाश स्रोतों की सहायता से दिखता है, जरा सोचो! अगर प्रकाश हो ही न तो क्या होगा? क्या रंग दिखेंगे? क्या वस्तुएँ दिखेंगी? प्रकाश की कमी में (जैसे – क्या चाँदनी रात में हम पुस्तक में लिखे शब्दों को पढ़ पाते हैं?) शायद नहीं!

अभी मैं आपसे ग्रामीण क्षेत्र में अपने शिक्षण का एक अनुभव साझा करने जा रहा हूँ जो कि प्रकाश की कुछ भौतिक घटनाओं पर आधारित है। जब मैं प्रकाश के अपवर्तन के बारे में पढ़ा रहा था तो मैंने बच्चों में अक्सर एक समस्या को पाया जो प्रकाश की किरण का अभिलम्ब से दूर हटना व अभिलम्ब की ओर झुकने को लेकर था। कुछ बच्चे संशय में रहते कि सघन से विरल में जाने पर दूर होती है कि विरल से सघन में।

चूंकि विज्ञान संचारक के रूप में पूरे देश भर की संस्कृति को बारीकी से अवलोकित किया है और मेरा शिक्षण कार्य एक पिछड़े क्षेत्र में है इसलिए मुझे वहाँ की रुढियों व प्रथाओं के बारे में भली भाँति पता है। परिवेशीय माहौल को ध्यान में रख एक वास्तविक सामाजिक परम्परा रुपी एक काल्पनिक कहानी ने मेरे दिमाग में उथल पुथल मचाई जिसे मैं आप सभी से मनोरंजक ढंग से साझा कर रहा हूँ।

ध्यान रहे यहाँ प्रकाश (LIGHT) का बर्ताव मनुष्य जीवन के बर्ताव जैसा प्रतीत होता है परन्तु तकनीकी रूप से समानताओं का होना विषम होगा।

एक सज्जन जिनका नाम प्रकाश और उनकी पत्नी का नाम रोशनी। प्रकाश और रोशनी की एक उर्जावान बेटी है जिसका नाम "किरन" है। किरण श्वेत वर्ण सी चमकीली (स्नो व्हाईट सी), स्वभाव से सीधी–सादी अपने पिता जैसी है। माता–पिता व पुत्री विरल परिवार में खुशी से जीवन व्यतीत कर रहे थे। बेटी किरण अपने पिता प्रकाश की चाल (3•10 की घात 8 मीटर/सेकेण्ड अर्थात 3,00,000 किलोमीटर/सेकेण्ड) से सीधे सादे मार्ग में दौड़ती/फुदकती अर्थात इस विरल माध्यम में कभी विचलित न होती।

(प्रकाश का सीधी रेखा में चलना – उदाहरण स्वरुप चित्र)

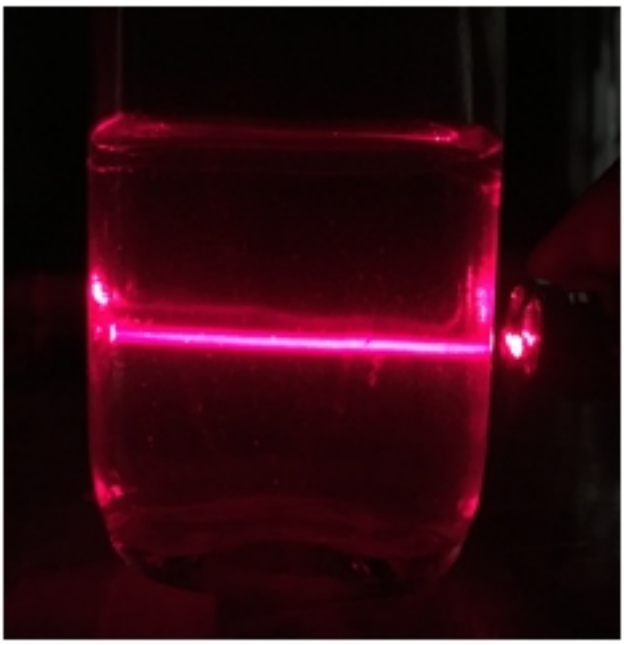

दो दशक बाद किरण का विवाह एक सघन परिवार में हुआ। ससुराल रुपी सघन माध्यम में किरण में काफी बदलाव आये। जब अपने पिता के घर थी तब पारिवारिक अभिलम्ब से मुक्त और जब अपने पूर्व विरल परिवार से ससुराल रूपी सघन परिवार (माध्यम के कण/पदार्थ के गुण में परिवर्तन) में प्रवेश होता है तो सभी सदस्यों के स्वभाव/मान–मर्यादा/संस्कार इत्यादि जैसे शब्दों (अपवर्तनांक) के बदलने से सघन परिवार (मुखिया अभिलम्ब) की ओर घूँघट रुपी झुकाव हो जाता है। यह ही नहीं बल्कि उसकी चाल में अवमंदन, उमंग (तरंगदैर्ध्य) में भी कमी अर्थात किरण को अब नए सघन परिवार की शर्तों पर चलना पड़ता है। लेकिन एक गुण जो उसके पिता प्रकाश ने उसे दिया और विषम परिस्थितियों में भी न बदले वो था उसकी मूल प्रवृत्ति अर्थात आवृति (रंग–ढंग, कार्यशैली) जिससे वह अभी भी सीधी सरल जीवन रेखा में उसी रंग ढंग से जीवन बिताती। विज्ञान की भाषा में कहें तो "जब प्रकाश एक माध्यम से दूसरे माध्यम में पहुँचता है तो उसकी आवृत्ति में परिवर्तन नहीं होता है।" तो क्या हुआ की उसकी चाल और उमंग में थोड़ा बदलाव आया और हम सभी जानते हैं कि परिवर्तन ही जीवन का नियम है लेकिन धैर्य बनाये रखने से मूल प्रवृत्ति (आवृति) में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

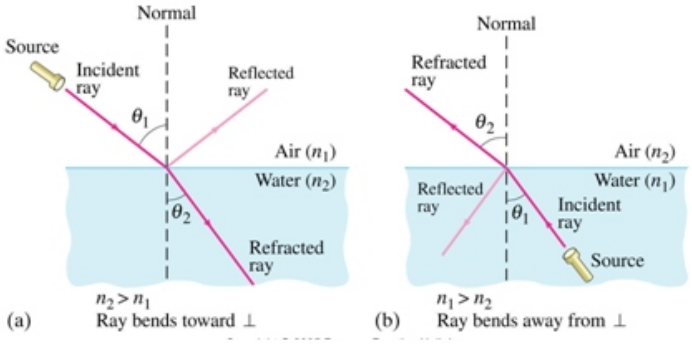

हमारी शिक्षण पद्धति की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि जब हम बच्चों को प्रकाश के परावर्तन और अपवर्तन के बारे में बताते हैं तो प्रायः पुस्तकों के अनुसार कक्षा 7 में परावर्तन और एक वर्ष पश्चात कक्षा 8 में अपवर्तन की घटना को पढ़ाया जाता है। जब हम परावर्तन को पढ़ाते हैं तो प्रायः अपवर्तन की घटना का जिक्र जरा भी नहीं करते हैं। जो कि प्रकृति के विरुद्ध और सिखाने की एक गलत प्रक्रिया है। सच तो यह है कि प्रकाश का अपवर्तन और परावर्तन दोनों घटनाएँ हमेशा एक साथ घटित होती हैं। परावर्तन प्रमुख रूप से हो रहा है, यह इस बात पर निर्भर करता है की प्रकाश जिस सतह से टकरा रहा है वह कितने प्रतिशत प्रकाश को अवशोषित कर

रहा है और कितने प्रतिशत परावर्तित कर रहा है।

जब प्रकाश किसी श्वेत, चिकनी, चमकीली (जैसे – दर्पण) सतह पर पड़ता है तो वह लगभग 95 प्रतिशत प्रकाश को परावर्तित कर देता है और शेष 5 प्रतिशत प्रकाश को अवशोषित कर लेता है और वहीं जब प्रकाश खुरदरी, अन्य पारदर्शी या सघन माध्यम (जैसे वायु से जल, वायु से काँच, जल से वायु आदि) में प्रवेश करता है तो उसका लगभग 95 प्रतिशत माध्यम द्वारा अवशोषित हो जाता है या प्रकाश अपवर्तित हो जाता है जबकि शेष 5 प्रतिशत उसी विरल या सघन माध्यम में परावर्तित हो जाता है।

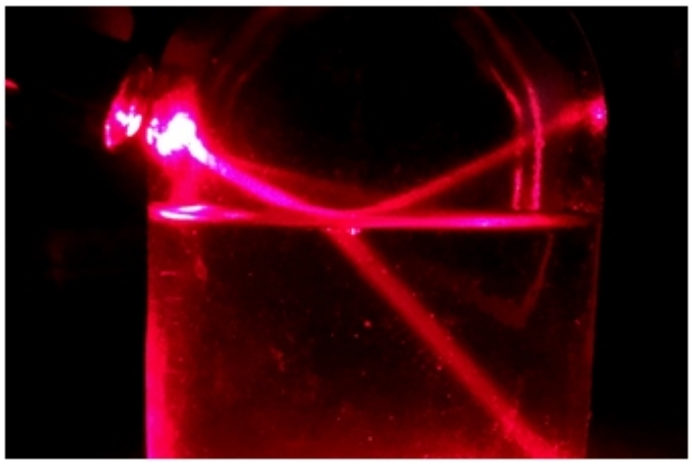

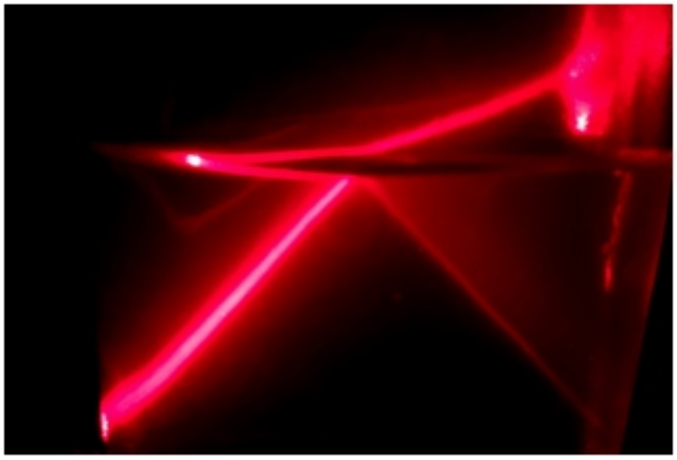

कहानी पर अगर वापस आया जाए तो जब किरण विरल माध्यम (मायका) से सघन माध्यम (ससुराल) में प्रवेश करती है तो किरण का 95 प्रतिशत ध्यान अर्थात झुकाव ससुराल रुपी सघन माध्यम में होता है लेकिन विरल माध्यम में परावर्तन रुपी 5 प्रतिशत अपने पिता का भी ख्याल होता है।

कुछ समय बाद एक दिन जब वह अपने विरल परिवार में वापस आई तो पुनः वही अपने प्रकाश की चाल, उमंग, मूल आवृति से खुशी–खुशी पहले पारिवारिक अभिलम्ब से दूर अपनी सखी सहेलियों से मिली क्यों कि यहाँ इस माध्यम में सघन की तुलना में आजादी, सुकून का एहसास मिला और हाँ! जब किरण सघन से विरल माध्यम में आती है तो 95 प्रतिशत अपवर्तित ऊर्जा अर्थात माता–पिता का ध्यान और 5 प्रतिशत परावर्तित ऊर्जा अर्थात ससुराल के सदस्यों की ओर ध्यान वापस जाता है।

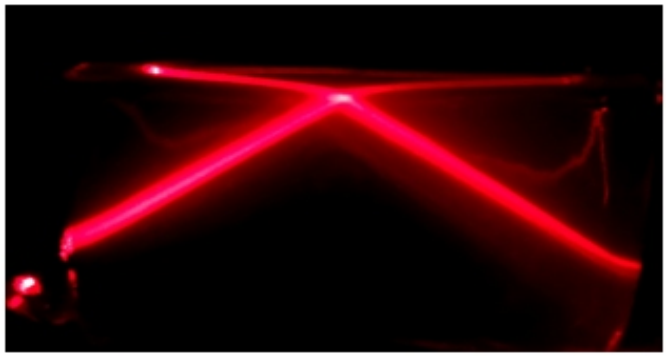

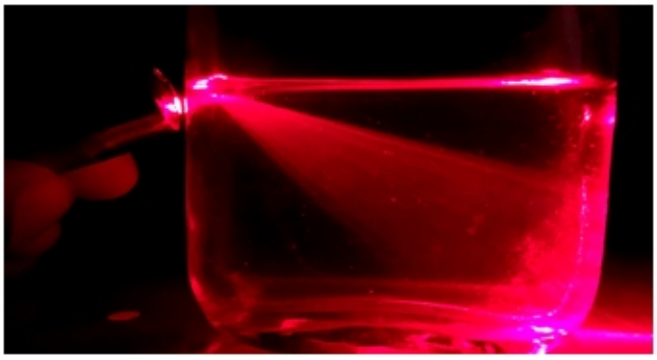

विज्ञान की सरल भाषा में हम इसे आंशिक परावर्तन भी कहते हैं।

हम जानते हैं कि जब किरण सघन माध्यम से विरल माध्यम माध्यम में प्रवेश करती है तो वह

अभिलम्ब से दूर हटती है और यह भी जानते हैं कि यदि सघन माध्यम से आपतित कोण का मान बढाया जाए तो अपवर्तित कोण का मान भी बढ़ता जाता है और एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब किरण बिना किसी आंशिक परावर्तन के पुनः सघन माध्यम में वापस लौट आती है इसी घटना को पूर्ण आंतरिक परावर्तन कहते हैं।

ऐसा कुछ वास्तविक जीवन में भी होता है समय के साथ जब जिम्मेवारियाँ बढ़ती हैं तो फिर पूरी ऊर्जा को एक ही माध्यम में केन्द्रित करना पड़ जाता है इसी को पूर्ण आंतरिक परावर्तन कहते हैं।

तो देखा मित्रों कितना आसान है विज्ञान को दैनिक जीवन से जोड़ना। इस भौतिकी की घटना का सीधा सम्बन्ध सामाजिक घटना से है। तो अब आसान हो गया न "जब प्रकाश की किरण विरल माध्यम से सघन माध्यम में प्रवेश करती है तो हमेशा अभिलम्ब की ओर झुकती है जबकि सघन माध्यम से विरल माध्यम में प्रवेशोपरान्त अभिलम्ब से दूर।"

तो याद रखें – " आओ सरल करें सघन से विरल करें "

मनीष कुमार
राष्ट्रीय विज्ञान संचारक/शिक्षक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगंज
विकास खण्ड सहार, जनपद–औरैया
9451524754/9719793888
manishyadav1407@gmail.com
YouTube: Gyan Ka Yan

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात